INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

भारतीय संत परंपरा और आध्यात्मिक संचार

***डॉ. राहुल गुप्ता**
सहायक प्रोफेसर
दीवान ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस
एनएच–58, मेरठ

*** दिनेश कुमार**
रिसर्च स्कॉलर
आई आई ऍम टी विश्वविद्यालय
मेरठ

Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17628475
PP:102-107

ARTICLE INFO
Received:11-08-2025
Revised:19-09-2025
Accepted: 10-11-2025
Published:01-12-2025

सारांश

यह सर्वविदित है कि संस्कारों का उद्देश्य मनुष्य का नैतिक उत्थान और उसके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करके जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुँचने के योग्य बनाना होता है। प्राचीन काल में इन्ही संस्कारों का संबंध मनुष्य के संपूर्ण जीवन से था। ये संस्कार जीवन भर इस संसार में और तत्पश्चात आत्मा के द्वारा परलोक में भी उस पर प्रभाव डालते थे। उस समय ये संस्कार हमको संतो, महापुरुषों आदि के माध्यम से प्राप्य थे। हम जानते हैं कि संतों की भक्ति में सांसारिक उत्थान है, इसीलिए संतों की भक्ति और विचारों का प्रभाव संपूर्ण समाज पर पड़ता है। समाज में संतों की यही वाणी मानव के सर्वांगीण विकास के लिए संजीवनी औषधि का कार्य करती है। हमारे समाज में समय समय पर संतों ने अपनी वाणी द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रति विद्रोह का कार्य किया है। उनके द्वारा किये जाने वाले सत्य आचरण के आधार पर ही हमारे समाज में हिन्दू धर्म तथा अन्य भारतीय धर्मों में सन्त उस व्यक्ति को कहा गया है जो सत्य आचरण करता है तथा आत्मज्ञानी है, जैसे संत शिरोमणि गुरु रविदास, सन्त कबीरदास, संत तुलसी दास गुरू घासीदास। 'सन्त' शब्द 'सत्' शब्द के कर्ताकारक का बहुवचन है। हमारे सभी धर्म ग्रंथ व्यक्ति को उच्च आदर्श पुरूष बनने की प्रेरणा देते है, और सन्त इंसान को इस जन्म मृत्यु के बंधन से मुक्त करवा कर जीव को परम सत्य का आभास करवा देते है, ताकि जीव खुद के अंदर विराजित परमात्मा को पहचान कर उसमें लीन हो जाए तथा संसार चक्र में मिलने वाली पीड़ा से हमेशा के लिए छुटकारा पा ले । संत हमें आनंदमय जीवन जीने के लिए प्रेरित करने के साथ साथ रोल मॉडल के रूप में कार्य करते हैं, इस वजह से, संतों को आध्यात्मिक मार्गदर्शक और गुरु माना जाता था। हालाँकि, संत जीवित पुस्तकें हैं। उनका जीवन हमें दिखाता है कि हमें अपना कैसे जीना है। वे हमें दिखाते हैं कि मानव, मानवता के माध्यम से क्या हासिल कर सकता है। वे उत्कृष्ट आदर्श होते हैं। वे लोगों को अच्छाई का जीवन जीना सीखाने में असामान्य रूप से अपनी भूमिका को निभाते हैं। वे ईश्वर की शक्ति के माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। संत हमें याद दिलाते हैं कि हम कभी अकेले नहीं होते। उनकी प्रार्थनाएँ पवित्रता के लिए प्रयास करने के हमारे प्रयासों में हमारा समर्थन करती हैं।

विशिष्ट शब्द: सांसारिक, आध्यात्मिक, उत्कृष्ट, **सनातन, अनुष्ठान, सत्संग, एवं शिष्टाचार**

प्रस्तावना

भारत सदैव संतों की भूमि रही है। आज भी हमारे देश में कई लोग हैं जो संत की उपाधि रखते हैं। लेकिन उनकी विशेषताएं अतीत के संतों से बिल्कुल भिन्न हैं। अनेकों वर्षों से भारतीय समाज और संस्कृति को एक सूत्र में बांधे रखने में संतों की अहम भूमिका रही है। उत्तर भारत में रामानंद से लेकर स्वामी रामतीर्थ तक हजारों संतों की सुप्रसिद्ध परंपरा ने भारतीय जनमानस को सर्वोत्तम मूल्य प्रदान किये हैं। देश की सांस्कृतिक संरचना की बात करें तो देश के इतिहास में कई बार विस्तारवादी शक्तियों ने हमारे देश पर न केवल भू-राजनीतिक हमले किये बल्कि देश की सांस्कृतिक संरचना को भी छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया। ऐसे में वे महान संत ही थे जिन्होंने देश की सुप्त चेतना को जगाकर मानवतावादी धर्म का संदेश दिया और हमारी गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित किया। दक्षिण भारत में संतों की परंपरा छठी शताब्दी से आलवार संतों से शुरू होती है। आलवार तमिल कवि एवं सन्त थे। इनका काल ६ठी से ९वीं शताब्दी के बीच रहा। उनके पदों का संग्रह दिव्य प्रबन्ध कहलाता है जो वेदों के तुल्य माना जाता है। आलवार सन्त भक्ति आन्दोलन के जन्मदाता माने जाते हैं। भारतीय संस्कृति में वेद और पुराण महत्वपूर्ण ग्रंथ माने जाते हैं जो भारतीय संस्कृति को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करते हैं फिर भी उनके बीच कुछ बुनियादी अंतर हैं। वेद, वैदिक संस्कृत में रचित धार्मिक ग्रंथों का एक बड़ा समूह हैं और व्यापक रूप से हिंदू धर्म के सबसे पुराने ग्रंथ माने जाते हैं। जबकि पुराण, भारतीय साहित्य का एक विशाल संग्रह है जो किंवदंतियों और पारंपरिक लोककथाओं जैसे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को समाहित करता है। पुराणों की रचना की बात करें तो पुराणों की रचना के बाद वेदांत के एकेश्वरवाद का महत्व घटने लगा और बहुदेववाद का प्रसार होने लगा। इसके प्रभाव से शैव, वैष्णव, शाक्त, नाथ, तांत्रिक आदि अनेक उप-धर्म या संप्रदाय अस्तित्व में आये। जैन धर्म और बौद्ध धर्म भी सम्प्रदायों में विभाजित हो गये थे। इन सभी उप-धर्मों में, विभिन्न अनुष्ठानों से जुड़ी धार्मिक गतिविधियाँ अधिक महत्वपूर्ण थीं। इन रीति-रिवाजों का प्रतिकार करने के लिए समन्वयवादी संतों का उदय हुआ। उन्होंने आम लोगों को कर्मकांडों, आडंबरों, अंधविश्वासों, अज्ञानता और कुरीतियों के जाल में फंसा हुआ देखा। ऐसे समय में संतों ने भ्रमित लोगों को राह दिखाने का काम किया। संत परंपरा के प्रथम प्रवर्तक प्रसिद्ध कवि जयदेव थे। उनसे लेकर 16वीं शताब्दी तक साधना, वेणी, त्रिलोचन, नामदेव, रामानंद, सेना, कबीर, पीपा, रैदास, दादूदयाल, रज्जब जैसे अनेक संतों ने संतमत को समृद्ध किया। ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम, रामदास आदि संतों की भक्ति ने महाराष्ट्र के आम लोगों के जीवन को सुंदर और बेहतर बनाया। इन संतों ने भक्ति मार्ग के साथ-साथ मानवतावादी विचारधारा को एक नया सार्थक रूप दिया। आठवीं शताब्दी के आरंभ में लोकमत और वेदमत का समन्वय होने लगा, जो भाषा और विचार दोनों की दृष्टि से लोकोन्मुख होता जा रहा था। 14वीं शताब्दी में स्वामी रामानंद ने इस आंदोलन को व्यापक रूप दिया। वे भक्ति के लिए वेद, संस्कृत भाषा, जाति-पाँति, अन्धविश्वास आदि को आवश्यक नहीं मानते थे। उन्होंने निचली जातियों और महिलाओं के लिए भक्ति का मार्ग खोला। दरअसल, उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन शुरू करने और मध्यकालीन सामाजिक व्यवस्था में सुधार का श्रेय रामानंद को ही जाता है। वह एक ब्राह्मण थे लेकिन उन्होंने वैष्णव धर्म में दो बड़े सुधार किये –

1. रामानंद जी के कारण भक्ति मार्ग में जाति-पाति भेदभाव की संकीर्णता समाप्त हो गई। उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर छोटी समझी जाने वाली जातियों के व्यक्तियों को अपना शिष्य बनाया और उन्हें अपने संप्रदाय में शामिल कर लिया।
2. उन्होंने अपने विचारों का प्रचार-प्रसार संस्कृत की बजाय जनभाषा में किया।

स्वामी रामानंद के विचारों से प्रेरित होकर उत्तर भारत में कबीर, महाराष्ट्र में नामदेव, पंजाब में नानक और बंगाल में चैतन्य महाप्रभु ने सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन को गति दी। इन संतों ने जातिविहीन समाज, रूढ़िवाद का परित्याग, आडम्बरों का परित्याग और भक्ति के

माध्यम से शरीर की शुद्धि का मार्ग प्रशस्त किया। इस संदर्भ में कबीर ने अन्य संतों की तुलना में समाज के कल्याण के लिए अधिक कार्य किये हैं। यदि कबीर साहेब स्वतंत्रता और निर्भयता को अधिक महत्व देते थे, तो गुरु नानक ने समन्वय और एकता पर विशेष बल दिया और इसी प्रकार दादू दयाल ने सद्भाव और सेवा को सर्वोत्तम माना। नाथपंथ ने जाति व्यवस्था का विरोध किया। सामाजिक और धार्मिक एकता की जो इमारत कबीर, दादू और नानक ने बनाई थी उसे रज्जब साहब ने और मजबूत किया। उन्होंने हिंदू धर्म और इस्लाम की संकीर्ण सीमा को पार किया और दुनिया को सृष्टिकर्ता से प्रेम करने का संदेश दिया। एक ओर मूर्तिपूजा, जप, तप, आडंबर और अंधविश्वास का बोलबाला था तो दूसरी ओर हज, नमाज, रोजा आदि में अधिक विश्वास था। इसके साथ ही इसमें पाखंड की प्रवृत्ति भी शामिल हो गई थी। उस समय प्रत्यक्ष जाति आधारित भेदभाव एवं आडंबर के कारण समाज में वर्ग असमानता एवं घृणा की भावना प्रबल थी। कबीर की तरह पलटूदास ने भी इस समस्या का अनुभव किया था और जाति व्यवस्था कायम करने वालों पर प्रहार किया था। उन्होंने समाज की आंतरिक और बाह्य प्रवृत्तियों पर एक साथ प्रहार किया और लोगों को भावना-प्रधान बनने के लिए प्रेरित किया। इस्लाम के सूफी संतों ने भी सामाजिक समरसता का संदेश दिया। हालाँकि कई संत उच्च जाति समुदाय से भी थे, लेकिन अधिकांश संत निचली जातियों के थे, इसलिए उच्च जातियों और धार्मिक नेताओं का एक बड़ा समुदाय उनकी गतिविधियों, धार्मिक सिद्धांतों आदि के खिलाफ खड़ा था। इसीलिए संतों ने जाति व्यवस्था का विरोध किया। समाज में संतों ने स्वयं अपने मानवतावादी विचारों का विरोध देखा और अनुभव किया। ऊंची जातियों और जाति व्यवस्था के समर्थकों के इस विरोध के जवाब में संतों ने अपनी वाणी से जनता को यह संदेश दिया कि जातिवाद ऊंच-नीच की विचारधारा, आडंबर आदि स्वार्थी नीतियों से प्रेरित है। सच्चा संत वही है जिसे मोक्ष, तीर्थयात्रा, व्रत-उपवास, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक आदि की कोई इच्छा नहीं होती। उसका न तो कोई मित्र होता है और न ही शत्रु। उनके लिए सभी जाति के लोग बराबर हैं । स्वामी दयानंद सरस्वती इसी श्रृंखला के एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे, जिन्होंने एकेश्वरवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन कर राष्ट्रीय स्तर पर जनजागरण का मंत्र फैलाया और समाज को पाखंड और कट्टरता के प्रति जागरूक किया। उन्होंने अशिक्षा, अज्ञानता, कुप्रथा, सती प्रथा आदि बुराइयों पर अपने भाषणों के माध्यम से समाज में एक नई चेतना जगाई जो बाद में आर्य समाज के रूप में पूरे देश में फैल गई।

आर्य समाज की अवधारणा

आर्य समाज की अवधारणा ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रगतिशील विचारधारा को जन्म दिया, जिसका भारतीय जनमानस पर व्यापक प्रभाव पड़ा। संतों की वाणी में यह स्वर निरंतर गूंजता रहता है कि सद्भावना, नैतिकता और दयालुता से न केवल व्यक्ति को बल्कि पूरे समाज को लाभ होता है। प्रेम, दान, त्याग, अहिंसा, क्षमा, अपरिग्रह, सहनशीलता तथा सत्य के पालन से ही समाज का कल्याण एवं उत्थान संभव है। यह उनकी सामाजिक सोच का प्रतिबिंब है, जिसमें जाति या रंग का रत्ती भर भी भेद नहीं है। इस दृष्टि से भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी के बाद मध्यकालीन भारत में संतों ने सामाजिक न्याय और समानता के लिए अथक प्रयास किया। इसलिए कह सकते हैं कि संतों ने सामाजिक चेतना जगाने में जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, उसे नकारना संपूर्ण समन्वयवादी सोच पर अविश्वास करने के समान है।

विभिन्न महान सन्त एवं उनके सम्प्रदाय

1850 से 1960 के बीच भारत में अनेकों महान आत्माओं का जन्म हुआ। राजनीति, धर्म, विज्ञान और सामाजिक क्षेत्र के अलावा अन्य सभी क्षेत्रों में भारत ने इस कालखंड में जो ज्ञान पैदा किया उसकी गूंज आज तक दुनिया में गूंज रही है। आज की युवा पीढ़ी को भारत की इन महान आत्माओं के बारे में अवश्य जानना चाहिये।

स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द एक हिंदू भिक्षु थेए जिन्होंने पश्चिमी दुनिया में भारतीय विचारों को साझा करने में बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने हिंदू धर्म में आध्यात्मिकता और लोगों को खुद को बेहतर ढंग से समझने के बारे में अपनी शक्तिशाली बातचीत और लेखन से लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया। उन्होंने महान भारतीय संत रामकृष्ण की शिक्षाओं का पालन किया और इन शिक्षाओं को फैलाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। 1893 मेंए उन्होंने शिकागो में धर्मों पर एक बड़ी बैठक में भारत और हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने इस बारे में बात की कि सभी धर्म आपस में कैसे जुड़े हुए हैं। स्वामी विवेकानन्द एक महान गुरु रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। वे आधुनिक भारत में एक अत्यधिक प्रभावशाली आध्यात्मिक नेता के रूप में खड़े हुए। उनकी शिक्षाएँ विश्व स्तर पर लाखों लोगों को प्रभावित करते हुएए सार्वभौमिक भाईचारेए सहिष्णुता और विविध मान्यताओं को स्वीकार करने पर जोर देती हैं। जो बात स्वामी विवेकानन्द को वास्तव में प्रेरणादायक बनाती हैए वह है अपने विश्वासों के प्रति उनकी दृढ़ प्रतिबद्धताए विशेषकर ऐसे समय में जब भारतीय संस्कृति को पश्चिम में गलतफहमी का सामना करना पड़ रहा था। उन्होंने स्वयं को शिक्षा देने और सांस्कृतिक अंतरालों को समझाने में समर्पित कर दिया। उनकी प्रेरणा व्यावहारिक आध्यात्मिकता पर उनके ध्यान से भी उत्पन्न होती है। स्वामी विवेकानन्द ने व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा का उपयोग दूसरों की सेवा करने और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया।

श्री अरबिंदो घोष

श्री अरबिंदो घोष एक भारतीय दार्शनिक , योगी , महर्षि , कवि थे। बाद में एक आध्यात्मिक सुधारक बन गएए जिन्होंने मानव प्रगति और आध्यात्मिक विकास पर अपने दृष्टिकोण का परिचय दिया । पांडिचेरी मेंए श्री अरबिंदो ने एक आध्यात्मिक अभ्यास विकसित कियाए जिसे उन्होंने इंटीग्रल योग कहा । उनकी दृष्टि का केंद्रीय विषय मानव जीवन का दिव्य शरीर में दिव्य जीवन के रूप में विकास था। वह एक आध्यात्मिक अनुभूति में विश्वास करते थे जिसने न केवल मानव प्रकृति को मुक्त किया बल्कि उसे रूपांतरित भी कियाए जिससे पृथ्वी पर दिव्य जीवन संभव हो सका। 1926 मेंए उनके आध्यात्मिक सहयोगीए मीरा अल्फ़ासा की मदद सेए श्री अरबिंदो आश्रम की स्थापना की गई थी।

योगी परमहंस योगानंद

पश्चिम में योग के ज्ञान की अलख जगाने वाले महान योगी परमहंस योगानंद की आत्मकथा ऐसे संसार में ले जाती है , जो मन और आत्मा के द्वार खोल देती है। परमहंस योगानंद का जन्म गोरखपुर में एक बंगाली परिवार में हुआ था। उन्होंने कहा था , पूर्व और पश्चिम को कर्म और आध्यात्मिकता से मिलकर बना मार्ग स्थापित करना होगा। भौतिक विकास में भारत को पाश्चात्य जगत से बहुत कुछ सीखना है और बदले में भारत अपनायी जा सकने वाली ऐसी विधियों का ज्ञान दे सकता हैए जिनसे पाश्चात्य जगत अपने धार्मिक विश्वासों को योग विज्ञान की अटल नींव पर स्थापित कर सकता है , उन्होंने ध्यान की महत्ता पर अपनी बात रखते हुए कहा कि ध्यान के विज्ञान द्वारा जीवन के अंतिम रहस्यों का पता लगाने के लिए केवल वही योग्य है , जो ईश्वर की खोज में अन्य सब कुछ त्याग देने का संकल्प करता है।

अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद जिन्हें स्वामी श्रील भक्तिवेदांत प्रभुपाद के नाम से भी जाना जाता हैए सनातन हिन्दू धर्म के एक प्रसिद्ध गौडीय वैष्णव गुरु तथा धर्मप्रचारक थे। आज संपूर्ण विश्व की हिन्दू धर्म भगवान श्री कृष्ण और श्रीमदभगवतगीता में जो आस्था है और समस्त विश्व के करोडों लोग जो सनातन धर्म के अनुयायी बने हैं उसका श्रेय जाता है अभयचरणारविंद भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद कोए इन्होंने वेदान्त कृष्ण-भक्ति और इससे संबंधित क्षेत्रों पर शुद्ध कृष्ण भक्ति के प्रवर्तक श्री ब्रह्म-मध्व-गौड़ीय संप्रदाय के पूर्वाचार्यों की टीकाओं के प्रचार प्रसार और कृष्णभावना को पश्चिमी जगत में पहुँचाने का काम किया। ये भक्तिसिद्धांत ठाकुर सरस्वती के शिष्य थेए जिन्होंने इनको अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से वैदिक ज्ञान के प्रसार के लिए प्रेरित और उत्साहित किया। इन्होंने इस्कॉन (ISKCON) की स्थापना की और कई वैष्णव धार्मिक ग्रंथों का प्रकाशन और संपादन स्वयं किया।

जिद्दू कृष्णमूर्ति

कृष्णमूर्ति दार्शनिक एवं आध्यात्मिक विषयों के लेखक एवं प्रवचनकार थे। वे मानसिक क्रान्ति) psychological revolution), मस्तिष्क की प्रकृति , ध्यान , मानवीय संबंधोंए समाज में सकारात्मक परिवर्तन कैसे लायें आदि विषयों के विशेषज्ञ थे। वे सदा इस बात पर जोर देते थे कि प्रत्येक मानव को मानसिक क्रान्ति की जरूरत है और उनका मत था कि इस तरह की क्रान्ति वाह्य कारकों से सम्भव नहीं है चाहे वह धार्मिक , राजनैतिक या सामाजिक कुछ भी हो । कृष्णमूर्ति की गहरी आध्यात्मिकता को देखकर उस समय के प्रमुख थियोसोफिस्ट , सी डब्लू लीड बीटर और श्रीमती एनी बेसेन्ट ने यह स्वीकार किया कि कृष्णमूर्ति का भविष्य एक महान् आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में विश्व का मार्गदर्शन कर सकता है। कृष्णमूर्ति पर प्रकृति का बहुत गहरा प्रभाव था। वे चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति प्राकृतिक सौन्दर्य को जाने और उसे नष्ट न करे। वे कहते थे कि शिक्षा केवल पुस्तकों से सीखना और तथ्यों को कंठस्थ करना मात्र नहीं है। उनके अनुसार शिक्षा का अर्थ है कि हम इस योग्य बने कि पक्षियों के कलरव को सुन सकें , आकाश को देख सकें , वृक्षों तथा पहाडियों के अनुपम सौंदर्य का अवलोकन कर सकें। उनके अनुसार दर्शन हमें साथ के लिए प्रेम , जीवन के लिए प्रेम तथा प्रज्ञा के लिए प्रेम जागृत करता है। उनका मानना है कि शिक्षण संस्थानों से हमें दर्शन के नाम पर जो कुछ पढाया या सिखाया जाता है वह मात्र विचारों एवं सिद्धांतो की व्याख्यायें होती हैं जिसमें सत्य के वास्तविक स्वरूप को देखने की क्षमता प्रायः समाप्त हो जाती है। कृष्णमूर्ति के अनुसार सत्य एक पथहीन भूमि है। सत्य तक पहुचने के लिए कोई राजमार्ग नहीं है। सत्य तो स्वयं के भीतर छुपा है।

महर्षि महेश योगी

जब भी संसार में सत्य की क्षति होती है, तब महापुरुष का अवतरण होता है । ऐसे महापुरुषों में इक्कीसवीं सदी के शीर्षप्राय रहे महर्षि महेश योगी । उनका जीवन ज्ञान विज्ञान का अद्भुत समन्वय, हास्य और गंभीरता का अनुपम दर्शन एवं ज्ञान, भक्ति और कर्म का नितांत संगम रहा । उनका व्यक्तित्व अपने आप में अद्वितीय था । चाहे आयुर्वेद हो या

यज्ञानुष्ठान, वास्तु अथवा गन्धर्व वेद, इन विद्याओं को पुनर्जीवन देने का और विश्वव्यापी बनाने का श्रेय उनका ही है । वेद विज्ञान को नया स्वरूप देना, विचारों के सीमित जगत में खोये व्यक्ति को भावातीत जगत का परिचय कराना, वहां दैवी शक्ति के स्पंदनों को जाग्रत करना, विश्व में शांति की स्थापना के लिए अग्रसर रहना ऐसी विविध भूमिकाएं उन्होंने पूर्णता और कुशलता से निभाई । महर्षि जी हमेशा कहते थे कि ज्ञान चेतना में निहित है । उनका जीवन चरित्र सत्वमयी चेतना वाले व्यक्ति ही लिख सकते हैं ।

ऐसा माना जाता है कि इन सब महान संतों ने अपने-अपने पंथ और संप्रदाय स्थापित किये होंगे, लेकिन ऐसा लगता है कि विभिन्न संप्रदायों को उनके शिष्यों ने ही लोकप्रिय बनाया होगा। हम उन सब महान संतों के विचारों और आदर्शों से कोसों दूर नजर आते हैं। अतः कहा जा सकता है कि संतों का मुख्य लक्षण त्याग है, संचय नहीं। पहले के संतों की कथनी, करनी और रहन-सहन में समानता होती थी, लेकिन आज के तथाकथित संतों में यह विशेषता किंचित मात्र भी दिखाई नहीं देती। स्वामी विवेकानन्द भारत की संत परम्परा के अंतिम नेता थे।

वसुधैव कुटुंबकम्

भारत जैसे पारंपरिक, रूढ़िवादी, जाति व्यवस्था, आडंबरपूर्ण और अंधविश्वासी देश में स्वामी रामानंद से लेकर स्वामी विवेकानंद तक कई संतों द्वारा सामाजिक चेतना जगाने के लिए किए गए प्रयास आज भी अधूरे हैं। यद्यपि तब और अब के बीच सांसारिक परिदृश्य में अनेकों परिवर्तन हुए हैं, परन्तु संतों की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्राचीन अवधारणा एवं मानवतावाद सदैव प्रासंगिक रहेगा। इस अवधारणा के पुनरुत्थान के लिए क्रांतिकारी चेतना का विकास आवश्यक है। वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन धर्म का मूल संस्कार और विचारधारा है जो महा उपनिषद सहित कई ग्रंथों में दर्शनीय है। इसका अर्थ है – "धरती ही परिवार है" (वसुधा एव कुटुम्बकम्)। यह वाक्य भारतीय संसद के प्रवेश कक्ष में भी सजा हुआ है, और यह महत्वपूर्ण धार्मिक और सामाजिक संदेश का प्रतीक है, जो विश्व एकता और मानवता के मूल मूल्यों को प्रमोट करता है। वसुधैव कुटुंबकम, जिसका संस्कृत में अर्थ है "दुनिया एक परिवार है", एक दर्शन है जो सभी जीवित प्राणियों के बीच एकता और संबंध को बढ़ावा देता है। यह दया और समझ को प्रोत्साहित करता है। यह विचार वेदांत के प्राचीन भारतीय दर्शन से आता है, जो मानता है कि सभी जीवित चीजें परमात्मा से जुड़ी हुई हैं, और हर जीवन पवित्र है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- https://www.google.com/search?q=swami+vivekanand+ek+sant+purush+in+hindi
- https://hindi.webdunia.com/sanatan-dharma-mahapurush/indian-monk-and-saint
- https://navbharattimes.indiatimes.com/navbharatgold/spirituality/autobiography-of-a-yogi-story-of-yogi
- https://www.google.com/search?q=mahesh+yogi
- https://www.google.com/search?q=bharat+kay+mahan+sant

CITATION:

Gupta, R., & Kumar, D. (2025). भारतीय संत परंपरा और आध्यात्मिक संचार. INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 102–107.